P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सफलता में अधिगम शैली का महत्त्व

कौशलेन्द्र तिवारी
शोधार्थी,
शिक्षक प्रशिक्षण विभाग,
डी.डब्ल्यू. टी.सी.,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत जैसे विकासशील और बहुसंख्यक राष्ट्र में व्यावसायिक शिक्षा की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए आजादी के बाद से ही भारत सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को पुनर्संगठित और सुव्यवस्थित करते समय व्यावसायिक शिक्षा को विशेष महत्त्व दिया। इसके लिए भारत सरकार ने समय–समय पर विभिन्न आयोगों, समितियों और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के माध्यम से शिक्षा को व्यावसायिक दृष्टिकोण देने का प्रयास किया। इन प्रयासों के फलस्वरूप व्यावसायिक शिक्षा और अंतर्निहित विभिन्न पाठ्यक्रमों में संख्यात्मक विस्तार व गुणात्मक सुधार हुआ है। साथ ही सरकार के द्वारा व्यावसायिक संस्थाओं को स्ववित्तपोषित मान्यता देने की अवधारणा ने व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण को तेजी से बढ़ने का अवसर प्रदान किया है। कानून, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, चिकित्सा और कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्रों में निजी शिक्षण संस्थाओं की बाढ़ सी आ गयी है। दूसरी तरफ अभिभावकों में अपने बच्चों की क्षमताओं को न समझते हुए भी इन व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ऐसी स्थिति में छात्रों के लिए उचित व्यवसाय का चयन और उसमें वांछित सफलता प्राप्त करना कठिन सा हो गया है। चयनित व्यावसायिक पाठ्यक्रम में विद्यार्थी द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त करने में अधिगम शैली जैसे सम्प्रत्यय की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया अधिगम केन्द्रित होती है और अधिगम का अधिगम शैली से प्रत्यक्ष व सकारात्मक सम्बंध होता है। उचित अधिगम शैली के चुनाव से अधिगम को प्रभावपूर्ण व लक्ष्यकेन्द्रित बनाया जा सकता है तथा वांछित सफलता को प्राप्त किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : अधिगम शैली, व्यावसायिक पाठ्यक्रमो ।

प्रस्तावना

वर्तमान युग विज्ञान, तकनीकी तथा भौतिक विकास का युग है। इस युग में किसी भी राष्ट्र और उसकी जनता की सम्पन्नता, कल्याण और वैभवता उस देश की तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के विकास पर निर्भर करती है। वस्तुतः किसी राष्ट्र और उसकी जनता की समृद्धि का पैमाना तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा को माना जा सकता है। तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा की दृष्टि से विकसित राष्ट्रों के नागरिक सफलता और समृद्धि से परिपूर्ण निरापद जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जबकि तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े राष्ट्रों के नागरिक दीन–हीन ढंग से जीवन यापन कर रहे हैं। वास्तव में किसी राष्ट्र के भौतिक व मानवीय संसाधनों का उचित ढंग से उपयोग करके ही उस राष्ट्र को प्रगति के उच्च शिखर पर आसीन किया जा सकता है। स्पष्ट है कि किसी देश की संपन्नता उसके नागरिकों की तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा पर आधारित होती है। भारत जैसे विकासशील और बहुसंख्यक राष्ट्र के लिए तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा की महत्ता और अधिक प्रासंगिक व समीचीन हो जाती है। देश में गरीबी हटाने, पिछड़ेपन को दूर करने, जनसामान्य के जीवन स्तर को उन्नत करने, विदेशी ऋणों से मुक्ति पाने जैसे प्रयासों को सफल बनाने के लिए तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा के संख्यात्मक विस्तार और गुणात्मक सुधार की तीव्र आवश्यकता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था लॉर्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है। इसमें अन्य दोषों के अलावा एक दोष यह भी है कि यह शिक्षा को व्यावसायिक दृष्टिकोण देने में विफल रही है। देश के औद्योगीकरण से शिक्षा का कोई प्रत्यक्ष सम्बंध नहीं है। फलस्वरूप शिक्षा प्राप्त करने के बाद आज देश में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। वर्तमान परिदृश्य में युवा पीढ़ी के लिए शिक्षित होना जितना आवश्यक है, शिक्षित होकर अपने रोजगार की व्यवस्था करना उससे भी अधिक जरूरी हो गया है। भीड़ और प्रतियोगिता के

इस युग में रोजगार प्राप्त करना एक कठिन कार्य हो गया है। स्पष्ट है कि इन सभी समस्याओं का एक निदान तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का विकास है। तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से जहाँ एक ओर देश के लोगों को संसाधन के रूप में परिणत कर बेरोजगारी की समस्या का समाधान करते हुए जीवन स्तर को उन्नत व समृद्ध बनाया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करके उसे विकसित व आधुनिक बनाया जा सकता है।

भारतीय पृष्ठभूमि में व्यावसायिक शिक्षा की प्रासंगिकता को दृष्टि में रखते हुए आजादी के बाद से ही भारत सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को पुनर्संगठित और सुव्यवस्थित करते समय व्यावसायिक शिक्षा को विशेष महत्त्व प्रदान किया। इसके लिए भारत सरकार ने समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों (राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग), शिक्षा समितियों (आचार्य राममूर्ति समिति, जनार्दन रेड्डी समिति आदि) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (1968, 1986 व 2020) के माध्यम से शिक्षा को व्यावसायिक दृष्टिकोण देने का प्रयास किया। मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से तैयार नई शिक्षा नीति 2020 के अंतिम मसौदे में कहा गया है कि शिक्षा के बाद विद्यार्थियों के लिए रोजगार के मौके बढ़ाने के लिए अगले छह वर्षों में स्कूलों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों के 50 फीसदी छात्र– छात्राओं को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जोड़ा जायेगा। इन प्रयासों के फलस्वरूप व्यावसायिक शिक्षा और अंतर्निहित विभिन्न पाठ्यक्रमों में संख्यात्मक विस्तार व गुणात्मक सुधार हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न व्यावसायिक पाठ्क्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करना और विद्यार्थियों की सफलता में उसके महत्त्व का अवलोकन करना है।

अधिगम शैली

अधिगम शैली से तात्पर्य सीखने की परिस्थितियों में सूचना को अर्जित व प्रक्रमित करने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा स्वभावगत या आदतन अपनाये जाने वाले विशिष्ट प्रारूप से होता है। अधिगम शैली के सम्प्रत्यय के पीछे निहित मूल अवधारणा है कि विभिन्न व्यक्ति सीखने के तौर–तरीकों में विभिन्नता रखते है। कई मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों एवं शोधकर्त्ताओं ने अधिगम शैली को परिभाषित करने का प्रयास किया है। सीगल एवं कूप (1974) के अनुसार अधिगम शैली वह एकीकृत अवधारणा है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के संज्ञात्मक आयामों को एक दूसरे से जोड़ती है। लीकोक (1978) के अनुसार अधिगम शैली का सम्बन्ध किसी अनुदेशात्मक वातावरण में किन्हीं विशिष्ट चरों के प्रति व्यक्ति की अनुक्रिया/प्रतिक्रिया करने के विशिष्ट तरीके हैं तथापि, संक्षिप्त रूप में अधिगम शैली अधिगमकर्त्ता के द्वारा सर्वोत्तम अधिगम की कोई विशिष्ट युक्ति है। रीटा तथा केनथ डन (1978 & 1992) ने अधिगम शैली को अधिगम कर्त्ता के द्वारा नवीन व कठिन सूचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने, प्रक्रमित करने तथा संरक्षित रखने के तरीके के रूप में परिभाषित किया था। उनके अनुसार इस प्रकार की अन्तर्क्रिया सभी व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न तरीके से संपन्न होती है। व्यक्ति की अधिगम शैलियों में अन्तर की यह जिज्ञासा 1970 के दशक में प्रमुखता से सामने आयी तथा इसने शिक्षा प्रक्रिया को भी सार्थक ढ़ंग से प्रभावित किया है।

जहाँ तक भारत का संदर्भ है तो अधिगम शैली के क्षेत्र में डॉ० सुभाषचन्द्र अग्रवाल ने अग्रणी भूमिका निभाई और अन्य शोधार्थियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। अग्रवाल (1987) ने अधिगम शैली को कारकों अथवा तत्त्वों के रूप में प्रस्तुत किया जो कि छात्रों के अधिगम को किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित करते हैं। उन्होंने अधिगम शैली को अधिगम के मार्ग में व्यक्ति के भौतिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा वातावरणीय तत्त्वों के प्रति वरीयताओं के मार्ग के रूप में परिभाषित किया।

अधिगम शैली के प्रकार

अधिगम शैली के वर्गीकरण के संबंध में विद्वानों में व्यापक वैचारिक भिन्नतायें दृष्टिगोचर होती हैं। वस्तुतः शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने ढ़ंग से अधिगम शैली की विमाओं, प्रकारों व नामकरण की चर्चा की है। जैसे, डेविड कोल्ब ने आनुभविक अधिगम सिद्धांत पर आधारित अपने निदर्श (Model) में अनुभवों को ग्रहण करने की दो अभिगमनों (Approaches) – स्थूल अनुभव (Concrete Experiences) तथा अमूर्त सम्प्रत्ययीकरण (Abstract Concepturlisation) की एवं अनुभव को बदलने की दो अभिगमनों–प्रत्यावर्तित अवलोकन (Reflective obsrevation) तथा सक्रिय प्रयोग (Active Experimentation) को समाहित करते हुए निम्न चार अधिगम शैलियों की चर्चा की है –

1. समायोजन : स्थूल अनुभव + सक्रिय प्रयोग
2. परम्परावादी : अमूर्त सम्प्रत्ययीकरण + सक्रिय प्रयोग
3. अपसारक : स्थूल अनुभव + प्रत्यावर्तित अवलोकन
4. समरूपक : अमूर्त सम्प्रत्ययीकरण + प्रत्यावर्तित अवलोकन

कोल्ब के निदर्श में पीटर हनी तथा ऐलन ममफोर्ड ने दो संशोधन/अनुकूलन करके अपना निदर्श प्रस्तुत किया है। इन्होने अधिगम शैली के अपने निदर्श में निर्णय निर्माण (Decision Making) व समस्या समाधान (Problem Solving) के प्रबंधकीय अनुभवों को समाहित करते हुए अधिगम शैली स्तर के नामों को निम्नवत ढंग से परिवर्तित करने का प्रयास किया –

1. क्रियाशील
2. प्रत्यावर्तक
3. सैद्धांतिक
4. प्रगतिवादी

इसके अलावा हनी तथा ममफोर्ड ने इन चारों शैलियों को व्यक्ति के व्यक्तित्व की स्थिर विशेषताएँ नही मानते हुए इन्हें स्व–इच्छा अथवा बदलती परिस्थितियों के आधार पर परिवर्तनीय पसन्द के रूप में स्वीकार किया है।

रीटा तथा केनथ डन ने अधिगम शैली को नवीन सूचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने, प्रक्रमित करने तथा संरक्षित करने की अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रिया के रूप में देखते हुए अधिगम शैली का एक व्यापक निदर्श प्रस्तुत किया था जिसमें पाँच वर्गों के अंतर्गत प्रस्तुत स्पैक्ट्रम में प्रत्येक

व्यक्ति के अधिगम करने की दृढ़ताओं (Strength) तथा पसंदों (Preferences) को पहचानने का प्रयास किया गया था। वस्तुतः उनके द्वारा प्रयुक्त किये गए ये पाँच वर्ग या पक्ष किसी भी व्यक्ति के सीखने में वैयक्तिक तरीकों को स्पष्ट करने में सक्षम हैं। ये पाँच वर्ग निम्नलिखित हैं–

1. वातावरणीय वर्ग
2. संवेगात्मक वर्ग
3. सामाजिक वर्ग
4. भौतिक वर्ग
5. मनोवैज्ञानिक वर्ग

रीटा तथा केनथ डन के द्वारा सुझाये गये निदर्श में सम्मिलित अधिगम शैली के इन पाँचों वर्गो के विभिन्न सूचकों (Parameters) तथा उनके स्तरों (Levels) में कुछ अनुकूलन करते हुए उन्हें निम्नवत् प्रस्तुत किया है –

वातावरणीय पक्ष (Environmental Aspects)

क्रम सं॰	सूचक	स्तर
1.	शोर (Noise)	1. शान्त (Quiet) – शान्त वातावरण में अध्ययन–मनन करना।
		2. शोरगुल (Sound) – हल्का–फुल्का संगीत या गायन में अध्ययन–मनन करना।
2.	प्रकाश (Light)	1. मन्द (Low) – कम प्रकाश में अध्ययन–मनन करना।
		2. तीव्र (Bright) – तेज प्रकाश में अध्ययन–मनन करना।
3.	तापमान (Temperature)	1. ठण्डा (Cold) – कक्ष का तापमान ठण्डा रखना।
		2. गर्म (Warm) – कक्ष का तापमान शरीर के अनुकूल रखना।
4.	प्रारूप (Design)	1. अनौपचारिक (Informal) – फर्श, सोफा, आराम कुर्सी, बिस्तर आदि पर बैठकर या खड़े होकर अध्ययन करना।
		2. औपचारिक (Formal) – पढ़ने की मेज–कुर्सी या डेस्क के द्वारा अध्ययन मनन करना।

संवेगात्मक पक्ष (Emotional Aspects)

क्रम सं॰	सूचक	स्तर
1.	स्व– अभिप्रेरणा (Self-Motivation)	1. स्व–अभिप्रेरित (Motivated) – स्व गति तथा तीव्रता से ज्ञानार्जन करना तथा बाह्य पर्यवेक्षण की जरूरत नहीं पड़ना
		2. अ–अभिप्रेरित (Unmotivated) – लापरवाही से ज्ञानार्जन तथा बाह्य पर्यवेक्षण की बीच–बीच में जरूरत महसूस करना।
2.	आग्रह (Presistence)	1. कम (Low) – अध्ययन मनन के प्रति लगाव व लगन का होना।
		2. अधिक (High) – अध्ययन में रूचि व लगन का अभाव होना।
3.	उत्तरदायित्व Responsisbility)	1. कम (Low) – अध्ययन–मनन में स्वयं के उत्तरदायित्व का महसूस नहीं होना।
		2. अधिक (High) – स्वयं के उत्तरदायित्व को भली–भॉति पहचानना।
4.	संरचना (Structure)	1. अन–अपेक्षित (Not-Expected) – सीखने के कार्य का प्रारूप अपेक्षित नहीं है।
		2. अपेक्षित (Expected) – सीखने के कार्य का प्रारूप अपेक्षित है।

सामाजिक वर्ग (Sociological Aspect) –

क्रम सं॰	सूचक	स्तर
1.	अध्ययन (Study)	1. अकेले में (Alone) – अकेले में बैठकर अध्ययन–मनन करना।
		2. समूह में (Peers) – संगी–साथियों के साथ बैठकर अध्ययन करना।
2.	अधिकारिता (Athority)	1. अन–अपेक्षित (Unexpected) – शिक्षकों के निर्देश के बिना अध्ययन करना।
		2. अपेक्षित (Expected) – समय–समय पर शिक्षक के निर्देश व अन्तर्क्रिया की अपेक्षा करना।
3.	अध्ययन विविधता (Study Diversity)	1. एकरूपी (Learn in one way) – सदैव एक ही ढ़ंग से अध्ययन–मनन करना।
		2. विषय रूपी (Prefers variety) – विभिन्न समय पर विविध ढंग से अध्ययन–मनन करना।

भौतिक वर्ग (Physical Aspect)

क्रम सं॰	सूचक	स्तर
1.	संज्ञानात्मक दृढता (Perceptual Strength)	1. ध्वनात्मक (Auditory) – पाठ्यवस्तु को बोलकर अध्ययन–मनन करना।
		2. दृश्विक (Visual) – पाठ्यवस्तु को देखकर अध्ययन–मनन करना।
		3. स्पर्शात्मक(Tactile)–पाठ्यवस्तु को महसूस करके अध्ययन–मनन करना।
		4. गत्यात्मक (Kinesthetic) – पाठ्यवस्तु को घूम–फिरकर अध्ययन–मनन करना।
2.	अल्पाहार (Intake)	1. नहीं (Does not prefer) – बीच में चाय/कॉफी/अल्पाहार न लेना।
		2. बीच में अल्पाहार (Prefers) – बीच में अल्पाहार, चाय/लंच आदि लेते रहना।
3.	अध्ययन समय (Study Time)	1. सूर्योदय से पहले (Early morning) – सूर्योदय से पहले अध्ययन–मनन करना।
		2. प्रातःकाल (Morning) – प्रातःकाल में अध्ययन–मनन करना।
		3. पूर्वाह्न (Late morning) – पूर्वाह्न में अध्ययन–मनन करना।
		4. अपराह्न (After morning) – अपराह्न में अध्ययन–मनन करना।
		5. संध्या (Evening) – संध्या में अध्ययन–मनन करना।
		6. रात्रि (Late evening)– रात्रि में अध्ययन–मनन करना।
4.	गतिशीलता (Mobility)	1. नापसन्द (Does not Perfer) – बिना व्यवधान के दीर्घ समय तक अध्ययन–मनन करना।
		2. पसन्द (Perfers) – बीच–बीच में हल्का शारीरिक व्यायाम लेकर शरीर को चलाना।

मनोवैज्ञानिक वर्ग (Phychological Aspect) ,

क्रम सं॰	सूचक	स्तर
1.	विश्लेषणात्मक या सामूहिक (Analytical or Global)	1. विश्लेषणात्मक (Analytical) – पाठ्यवस्तु का विश्लेषण करके सीखना।
		2. सामूहिक (Global) – पाठ्यवस्तु को एक साथ ग्रहण करना
2.	दायाँ–बायाँ मस्तिष्क (Right Brain or Left Brain)	1. दायाँ मस्तिष्क (Right Brain) – दायें मस्तिष्क का प्रयोग करके सीखना।,
		2. बायाँ मस्तिष्क (Left Brain) – बायें मस्तिष्क का प्रयोग करके सीखना
3.	परावर्तित या आवेशित (Reflective or Impulsive)	1. परावर्तित (Reflective) – प्रतिक्रिया करते हुए सीखना।
		2. आवेशित (Empulsive)– सीखने की प्रक्रिया में अन्दर से आवेशित होना।
4.	अभिभावक अभिप्रेरण (Parent Motivated)	1. कम (Low) – अध्ययन–मनन को अभिभावकों द्वारा प्रेरित नहीं करना।
		2. उच्च (High) – अध्ययन–मनन को अभिभावकों द्वारा प्रेरित करना।
5.	अध्यापक अभिप्रेरण (Teacher Motivated)	1. कम (Low) – अध्ययन–मनन को अध्यापकों द्वारा प्रेरित नहीं करना।
		2. उच्च (High) –अध्ययन–मनन को अध्यापकों द्वारा प्रेरित करना।

औचित्य तथा महत्त्व

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र होते है। विद्यालयी शिक्षा छात्रों का सर्वांगीण विकास करके उन्हें श्रेष्ठ मानव बनाने का प्रयास करती है। परन्तु, जिस प्रकार हमारा जीवन विभिन्न कठिनाइयों और समस्याओं से युक्त है, उसी प्रकार शिक्षा प्रक्रिया भी कठिनाइयों और समस्याओं से मुक्त नहीं है। फिर वह चाहे किसी भी स्तर पर दी जानें वाली अकादमिक शिक्षा हो या व्यावसायिक शिक्षा, प्रत्येक स्तर पर भिन्न –भिन्न प्रकार की समस्यायें छात्रों के सम्मुख आती हैं और इन समस्याओं का स्तर अलग–अलग होता है। ये समस्यायें कई प्रकार की हो सकती हैं जैसे शारीरिक, आर्थिक, मानसिक आदि। शारीरिक और आर्थिक समस्याओं का निदान तो बहुधा डॉक्टर और माता– पिता द्वारा कर दिया जाता है। परन्तु, मानसिक स्तर पर उत्पन्न समस्यायें कई बार विकराल रूप धारण कर लेती हैं। चूँकि ये समस्यायें दृष्टिगोचर नहीं होती है, इसलिए इनके बारे में दूसरा व्यक्ति अनभिज्ञ होता है। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्यायें यथा उनकी चिन्ता व कुण्ठा का उनके शैक्षिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बंधित समस्यायें निरंतर बढ़ती जाती हैं।

आज युवा वर्ग की महत्वाकांक्षायें बढ़ती जा रही हैं। खासकर महानगरों एवं शहरों में जागरूक युवा सोच समझकर अपने व्यवसाय का चुनाव करते हैं। उभरते हुए युवाओं के चुनौतीपूर्ण उज्जवल भविष्य के लिए कई सुनहरे व्यवसाय उपलब्ध हैं, जैसेकि कम्प्यूटर विज्ञान, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, कानून, प्रबंधन, अध्यापक शिक्षा इत्यादि। बालक उपरोक्त में से किसी भी व्यवसाय को चुनकर अपना भविष्य सुधार सकता है और अपने जीवन में सफल हो सकता है।

वर्तमान में सरकार के द्वारा व्यावसायिक संस्थाओं को स्ववित्तपोषित मान्यता देने की अवधारणा ने व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण को तेजी से बढ़ने का अवसर प्रदान किया है। कानून, प्रौद्योगिकी,

प्रबंधन, चिकित्सा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में निजी शिक्षा संस्थाओं की बाढ़ सी आ गयी है। दूसरी तरफ अभिभावकों में अपने बच्चों की क्षमताओं को न समझते हुए भी इन व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों द्वारा चयनित व्यावसायिक पाठ्यक्रम में वांछित सफलता प्राप्त करना कठिन सा हो गया है।

किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सफलता में अन्य कारकों के साथ–साथ अधिगम शैली का योगदान भी आवश्यक और अपेक्षित है। सम्पूर्ण कक्षा–कक्ष शिक्षण प्रक्रिया अधिगम केन्द्रित होती है और अधिगम दक्षता अधिगम शैली से प्रभावित होती है। उचित अधिगम शैली का चयन वांछित सफलता की प्राप्ति में सहायक हो सकता है। यथा, लेटकर न पढ़ना, सुबह उठकर पढ़ना, पढने के बीच में अल्प विराम करना, पढ़े हुए पाठ को दोहराना, मुख्य अंश के नोट्स लेना अथवा रेखांकित करना इत्यादि अधिगम के कुछ ऐसे तौर–तरीके हैं जिनका विद्यार्थियों की सफलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शोधार्थी स्वयं अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित है। उसे भी अपने पाठ्यक्रम में सफल होने के लिए अधिगम शैली के महत्त्व से परिचित होना पड़ा था। अतः उपर्युक्त तथ्यों और पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने अपने शोध प्रकरण में अधिगम शैली जैसे चर के अध्ययन पर बल दिया। प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित प्रकार से उपयोगी हो सकता है–,

व्यक्तिगत स्तर पर ,

अधिगम शैली के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थीयों के व्यक्तिगत स्तर पर नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। वे अपने व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अपेक्षित सफलता के लिए इन निष्कर्षों से लााभ उठा सकते हैं। स्वयं शोधार्थी के लिए ये निष्कर्ष बहुत उपयोगी हो सकते हैं क्योकि वह भी एक प्रमुख व्यवसाय अर्थात् अध्यापक शिक्षा से सम्बंधित है। ,

समाज एवं राष्ट्र के लिए

यदि समाज में प्रत्येक व्यक्ति सुशिक्षित तथा रोजगारयुक्त होगा तो निश्चित ही एक सुसमायोजित, सभ्य, सुसंस्कृत और पढ़े–लिखे समाज का निर्माण होगा।

आज के कम्प्यूटरीकृत, औद्योगिक और तकनीकी युग में राष्ट्र की मांग है कि अधिकांश नागरिक तार्किक, सुनियोजित, सतर्क, एकाग्र, चिंतनशील तथा उच्च ग्राह्य क्षमता वाले तथा उच्च वैचारिक स्तर वाले हों। अधिकतर व्यवसायी ओर उद्यमी अपने व्यवसाय मे उच्च और दक्ष कौशल वाले व्यक्ति को प्राथमिकता देते है। अतः यदि हम अपने विद्यार्थियों को राष्ट्र और समाज की मांग के अनुरूप तैयार करते हैं तो आवश्यक है कि हम यह जानें कि अधिगमदक्षता और कौशल विकास पर अन्य कारको के साथ–साथ अधिगम शैली जैसे कारक भी प्रभाव डालते हैं। तभी हम बड़ी संख्या में योग्य इंजीनियर, कम्प्यूटर विशेषज्ञ, कानूनविद, प्रबंधक अथवा चिकित्सक तैयार कर पायेंगें जो उच्च स्तरीय अनुसंधान करके तथा नई तकनीक विकसित करके विश्व में एक राष्ट्र का नाम ऊँचा कर सकते हैं।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षित सफलता में अधिगम शैली जैसे सम्प्रत्यय का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज के प्रतिस्पर्धापूर्ण और तनाव भरे वातावरण में वांछित सफलता की प्राप्ति में अधिगम शैली की भूमिका और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। सम्पूर्ण कक्षाकक्ष शिक्षण प्रक्रिया अधिगम केन्द्रित होती है। प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में वांछित सफलता के लिए सरल, सुबोध, स्पष्ट व उच्चस्तरीय अधिगम अपेक्षित है। ऐसे अधिगम के निए अधिगम शैली का अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि अधिगम का अधिगम शैली से प्रत्यक्ष व सकारात्मक सम्बंध है। उचित अधिगम शैली के चयन से अधिगम को प्रभावपूर्ण व लक्ष्य केन्द्रित बनाया जा सकता है और वांछित सफलता को यथार्थरूप दिया जा सकता है। जबकि अधिगम शैली का गलत चुनाव विद्यार्थी के अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव ड़ाल सकता है और उसे वांछित सफलता से दूर कर सकता है। इस प्रकार अपेक्षित सफलता की प्राप्ति में अधिगम शैली का योगदान स्पष्ट है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सीगल, आई० इ० & कूप, आर० एच० (1974); कॉग्नेटिव स्टाइल एण्ड क्लासरूम प्रेक्टिस इन साइकोलॉजीकल कन्सैप्ट इन दि क्लासरूम, आर० एच० कूप एण्ड के० व्हाइट (इडस), न्यूर्याक, हार्पर एण्ड रो, पी–53

डन, आर० & डन, के० (1978); टीचिंग स्टूडेन्ट्स थ्रो देयर इण्डीविजुअल लर्निंग स्टाइल्स, रेस्टन, वी०ए०, रेस्टन

लीकोक, वी० के० (1978); एसेसिंग लर्निंग करैक्टेरिस्टिक्स इन रार्बट एम० एण्डरसन, जॉन जी० ग्रीर एण्ड सेरी जे० ओडली (इड्स), इन्डिविजुअलाइजिंग एजूकेशनल मैटेरियल फॉर स्पेशल चिल्ड्रन दि मेन स्ट्रीम, बैल्टीमोर, यूनिवर्सिटी लार्क प्रेस, पी–29

अग्रवाल, एस० सी० (1987); लर्निंग स्टाइल्स एमंग क्रिएटिव स्टूडेन्ट्स, इलाहाबाद, सेन्ट्रल पब्लिसिंग हाउस, पी–6

डन, आर० & डन, के० (1992); टीचिंग सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स थ्रो देयर इन्डीविजुअल लर्निंग स्टाइल्स, बोस्टन, एलाइन & बेकन

गुप्ता, ए०. & गुप्ता, एस० पी० (2017); उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ, 427–433।

APA शैली, Retrived from https://wps.prenhall.com

APA शैली, Retrived from http://www.shmoop.com